वी. एन्ड सी. पटेल अंग्रेजी विद्यालय

दिनांक : २२-९-१७ **अर्धवार्षिक परीक्षा** पूर्णांक-१००

समय : ३ घण्टा **कक्षा – १२ विषय : हिन्दी**

खंड : क

प्र-१ निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। १५

अध्यात्म के मार्ग में मन जब तक साथ चलता है तब तक संसार ही अनेक रूपों में हमारे साथ चलता है, पर जैसे-जैसे मन अपने आराध्य, ईष्ट, परमात्मा के प्रभाव क्षेत्र के निकट आता जाता है उसका गुरुत्वाकर्षण और कामनाहीन मन ही अमन अर्थात् अपनी वृत्तियों से हीन हो जाने पर परम सत्य का आश्रयदाता हो जाता है। मन के साथ कर्तापन वा बोध, अहंकार, सुख-दुःख सब कुछ होता है और जब तक यह चित्त की वृत्ति के साथ होता है तब तक अपने आराध्य से विरत रहता है। इसे इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि मन एक समय एक ही कार्य कर सकता है। यह या तो संसार में विचरण कर सकता है या सृष्टी के सान्निध्य सुख का लाभ उठा सकता हैं। गोपियों के द्वारा सूर ने यही बात कहाई है – "ऊधौ मन नाहीं दस बीस।" मन अलोना भी तभी होता है जब वह संसार के षट्रस व्यंजन से विमुख होकर एकरस परमात्मानंद में लीन होता है।

मन ध्यान की नीरव और नीरस डगर में भी रमता है और अंतस के निकुंज में रास भी रचाता है। ये दोनो अंर्तमुखी प्रवृत्तियाँ है। साधक, सत्संगी या भक्त को अपने मूल स्वभाव के अनुसार ही अंर्तयात्रा का मार्ग चुनना चाहिए। ऐसे भी इस रास्ते से परमात्मा को पाया जा सकता है, पाया भी गया है। कबीर ने बिना पातंजलि योग दर्शन का मार्ग चुने अनंत और अनहद को जिस तरफ अवगाहा वह इसका ज्वलंत प्रमाण है। आज के संशलिस्ट युग में भक्ति और संकीर्तन का मार्ग सामान्य व्यक्ति के लिए सहज मार्ग है अपने से उसके तक जाने का। मन की एकाग्रता हर पंथ में प्रवेश की पहली शर्त है।

एकाग्रता रीझने से भी होती है और खीझने से भी, बस केंद्र में होना 'उसे' ही चाहिए। तुलसी ने अनुभव के आधार पर ही यह कहा है – "तुलसी अपने राम को रीझि भजो चाहे खीझ। खेत परे पै जामिहैं उल्टो सीधो बीज।" संसार में रहते हुए, अपने चिंतन और आचरण से यदि हम अपने अंदर बैठे विराट की इस कृपा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते रहें कि उसने हमें अपना ही अंश मान कर धन्यता प्रदान की हैं तो भी भजन की प्रक्रिया पूर्ण हो लेगी। परमात्मा का नाम या उसके चरित्र का स्मरण अथवा उसके किसी रूप पर मन को जीवन व्यापार करते हुए चिन्तन में रखना एक सद्गृहस्थ को श्रेष्ठ भक्ति का प्रतीक है। बाहर और अंदर का संतुलन बनाए रखने से जीवन-योगी का आचरण आज के युग की परम आवश्यकता है। परस्पर प्रेम, एक दूसरे के प्रति सद्भावना और सब में परमात्मा का अंश मान कर आदर करने का भाव आध्यात्मिक व्यक्ति के बाह्य आचरण का अंग है। यह अमन का अमन रूप है।

प्रश्न : १. उपयुक्त शीर्षक दीजिए। २. ईश्वर के निकट जाने पर मानव मन कैसा हो जाता है ?
३. मन अलोना कब होता है ? ४. आज के युग में भक्ति का क्या मार्ग है ?
५. आज के युंग की परम आवश्यकता क्या है ?

पीछे

प्र-२ निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए । ५

सागर के उर नाच-नाच करती है लहरें मधुर गान ।
जगती के मन को खींच खींच,
निज छवि के रस से सींच-सींच
जल कन्याएँ भोली अजान,
सागर के डर पर नाच-नाच, करती है लहरें मधुर गान ।
प्रातः समीर से हो अधीर,
छूकर पल-पल उल्लसित तीर,
कुसुमावलि-सी पुलकित महान,
सागर के उर पर नाच-गान, करती है लहरे मधुर गान ।
संध्या से पाकर रुचिर रंग,
करती-सी शत सुर-चाप भग,
हिलतीं नव तरु-दल के समान,
सागर के डर पर नाच-नाच, करती है लहरें मधुर गान ।
करतल-गत कर नभ की विभूति,
पाकर-शशि-से सुषमानुभूति
तारावली-सी मृदु दीप्तिमान,
सागर के उर पर नाच-गान, करती है लहरे मधुर गान ।

प्रश्न : १. सागर के उर पर कौन नाचता है ?
२. लहरों को कवि ने किस रूप में देखा है ?
३. संध्या से लहरों को कैसा रंग प्राप्त होता है ?
४. 'करतल-गत कर नभ की विभूति' – पंक्ति से कवि का क्या तात्पर्य है ?
५. इस पद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए ।

खंड : ख

प्र-३ निम्न में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए । ५

१. बेकारी की समस्या २. मुझे भारतीय होने पर गर्व है ३.भारतीय समाज में नारी

प्र-४ दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण परीक्षा देने में असमर्थता प्रकट करते हुए अपने प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए । ५

प्र-५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में लिखिए । ५

१. जनसंसार के कार्य कौन-कौन से है ?
२. पत्रकारिता के विविध आयाम कौन-कौन से है ? ३. डेडलाईन किसे कहते है ?
४. समाचार क्या है ?
५. खोजपरक पत्रकारिता किसे कहते है ?

प्र-६ सुरक्षा की चुनौती विषय पर आलेख तैयार कीजिए । ५

प्र-७ पर्यटन के महत्त्व पर एक फीचर लिखिए । ५

खंड : ग

प्र-८ निम्नलिखित काव्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए । ८

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
जरा टेढी फँस गई ।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा पलटा
तोड़ा मरोड़ा
घुमाया किराया
कि भाषा से बाहर आए
लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ
बातें ओर भी पेचीदा होती चली गई ।
सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
में पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इस करतब पर मुझे
साफ सुनाई दे रही थी
तमाशाबीनो की शाबाशी और वाह वाह ।

क) बात को धैर्य से समझने से कवि का क्या आशय है ?
ख) भाषा और बात एक-दूसरे से कैसे संबंधित है ?
ग) बात पेचीदा कब बन जाती है ?
घ) भाषा के चक्कर में जरा टेढी फँस गई' वाक्य का क्या अर्थ है ?

प्र-९ निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए । ६

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ !

प्रश्न : १. कवि किसका पान करते है ?
२. भाव स्पष्ट कीजिए जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते ।
३. कवि अपना जीवन कैसे जीते है ?

प्र-१० निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए । ६

१. 'हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे, पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है ?
२. 'बहलाती सहलाती आत्मीयता' बरदास्त नहीं होती है – और कविता के शीर्षक "सहर्ष स्वीकारा है" में आप कैसा अन्तविरोध पाते हैं । चर्चा कीजिए ।
३. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते है ?

प्र-११ निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए । ८

उस बल को नाम जो दो, पर वह निश्चय स बल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है वह कुछ अपर जाति का तत्त्व है । लोग स्पिरिचुअल कहते है; आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते है । मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों में अंतर देखूँ और प्रतिपादप करुँ । मुझे शब्द से सरोकार नहीं । मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ । लेकिन इतना तो है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ बल का बीज नहीं है । बल्कि यदि उसी बल तो सच्चा बल मानकर बात की जाए तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती हे । निर्बल ही धन की ओर झुकता है । घर अबलता है । वह मनुष्य पर धन की औश्र चेतन पर जड़ की विजय है ।

प्रश्न :

क. पाठ तथा लेखक का नाम बताइए ।
ख. लेखक किसके बारे में बताता है ?
ग. जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है – स्पष्ट करें ।
घ. व्यक्ति की निर्बलता क्या है ?

प्र-१२ निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए । १२

१. 'पहलवान की ढोलक' कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए ?
२. बाज़ार के जादू के चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है ?
३. जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह से सही ठहराया ?
४. 'भक्तिन अच्छी है' यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं ।' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

प्र-१३ यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते है ? ऐसा क्यों ? चर्चा कीजिए । ५

प्र-१४ निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए । १०

१. कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया ?
२. स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ ?
३. यशोधर बाबू के अपने परिवार के साथ संबंध कैसे थे ?